सीखने के अपेक्षित परीणाम बी.ए. संस्कृत ऑनर्स/ पीएच.डी. संस्कृत/एम.ए. ज्योतिष /एम. ए.वैदिक अध्ययन

(Expected Learning Outcomes For B.A. Sanskrit Honours / M.A. in Jyotish / M.A. in Vedic Studies)

(2021-2022)

A.	**ज्ञान** **(Knowledge)**	**बी.ए. संस्कृत ऑनर्स BASKH** • संस्कृत भाषा और साहित्य का विस्तृत ज्ञान होगा। • संस्कृत के अतिरिक्त साथ– साथ अन्य विविध विषयों के अध्ययन के अवसर भी उपलब्ध होंगे। • संस्कृत व्याकरण के माध्यम से संस्कृत भाषा को सीखने व समझने का अवसर मिलेगा।	**एम0ए0ज्योतिष** • ज्योतिष शास्त्र वेद का अंग है। इसमें दिनमान, रात्रिमान, सूर्योदय, चंद्रोदय की गणितीय परंपरा का ज्ञान कराया जाएगा। • इस कार्यक्रम में आकाशीय पिंडों, ग्रह नक्षत्रों, सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण आदि गतिविधियों का ज्ञान होगा। • एक संवत्सर में भारतीय परंपरा के अनुसार दिन ,तिथि, मास और वर्ष का विभिन्न पक्षों से संबंधित ज्ञान कराया जाएगा। • भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्योतिष का 21वीं शताब्दी में क्या उपयोग है इस बात का भी विशेष लाभ होगा। ज्योतिष से संबंधित ज्ञान विज्ञान के साथ–साथ खगोलीय घटनाओं का ज्ञान होगा।	**एम0ए0 वैदिक अध्ययन** • वैदिक साहित्य का विस्तृत परिचय प्राप्त होगा। वेद के अंग के रूप में सभी शास्त्रों का परिचयात्मक ज्ञान होगा। • आरण्यक साहित्य के अध्ययन का अवसर मिलेगा। ब्राह्मण ग्रंथों से परिचय प्राप्त होगा। इनमें वर्णित ज्ञान विज्ञान का अध्ययन सुलभ होगा। • वेद से प्राप्त विभिन्न दार्शनिक ,सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य, गणित, विज्ञान आदि समस्त विशिष्ट विज्ञान से संबंधित वैदिक ज्ञान राशि का व्यवस्थित अध्ययन उपलब्ध होगा।
B.	**कौशल** **(Skills)**	• संस्कृत व्याकरण के नियमों को आसानी से समझकर व्यवहार में प्रयोग कर पायेंगे। • संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रति विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक, तुलनात्मक,सृजनात्मक,अनुसन्धानात्मक और आलोचनात्मक	• ज्योतिष की वेदांगता को आसानी से समझकर इसके गणितीय पक्ष की जानकारी हासिल करते हुए दिनमान, रात्रि मान, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि निकालने और	• समस्त शास्त्रों का विकास वेद से हुआ है। इस कार्यक्रम में अध्ययन करने वाले सभी अभ्यर्थियों को शिक्षा कल्प निरुक्त व्याकरण छंद और ज्योतिष के साथ–साथ गणित विज्ञान आदि की जानकारी के पश्चात विभिन्न प्रकार की विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक योग्यता

		शक्ति का विकास होगा। • विषय से संबंधित समस्याओं का समाधान स्वयं खोजने में सफल होंगे।	बताने का कौशल अर्जित होगा। • आकाश में होने वाली खगोलीय गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने से भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति चेतनता का विकास होगा। • छात्रों में अनुसंधान की प्रकृति का जागरण होगा। संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग और विश्वास की वृद्धि होगी। भारतीय विद्या की वैज्ञानिकता पर विश्वास होगा।	का विकास होगा। • अध्ययन के पश्चात अनुसंधान करने कौशल विकसित होगा तथा समाज में वैदिक ज्ञान राशि के प्रचार प्रसार की साधारण कला प्राप्त होगी।
C	**ज्ञान और कौशल का व्यवहारिक प्रयोग** **(Applications of Knowledge and Skills)**	• संस्कृत भाषा के व्याकरण को सीख कर छोटे–छोटे वाक्य कविताएँ, पत्र लेखन और निबंध लेखन इत्यादि में कुशलता प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे। • संस्कृत में संभाषण कर सकने में समर्थ होंगे ,जिससे संस्कृत भाषा का प्रचार व प्रसार होगा।	• गणित और सिद्धांत तथा फलित को जानकर धीरे–धीरे समाज में इसके व्यावहारिक उपयोग करने की बुद्धि का उत्कर्ष होगा। • भारतीय ज्योतिष के ज्ञान से पाश्चात्य परंपरा की तुलना करके वेदांग ज्योतिष की श्रेष्ठता समझने तथा समाज में इसकी स्थापना करने का व्यवहारिक ज्ञान भी प्राप्त होगा। • फलित ज्योतिष की वैज्ञानिकता से परिचित होगा, शिक्षा के क्षेत्र में, चिकित्सा के क्षेत्र में, व्यवसाय के क्षेत्र में, पुरुषार्थ की प्राप्ति के क्षेत्र में ज्योतिष विद्या के उपयोग का मार्ग बतलाने में दक्ष हो सकेगा।	• वेद के विभिन्न उपनिषदों, शास्त्रों से तथा वैदिक भाष्यकारों द्वारा बताए गए वैदिक ज्ञान मार्ग का अनुसरण करने के पश्चात कोई भी अभ्यर्थी भारतीय अंकगणित, बीजगणित, रेखा गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, धातु, कला इत्यादि की जानकारी प्राप्त करके समाज के किसी भी व्यक्ति को जानकारी देने में तथा उसके व्यवहारिक प्रयोग में सफल होगा

D	अनुसंधान सम्बन्धित दक्षता **(Research Related Competencies)**	• एक समस्या के समाधान के लिए उससे सम्बन्धित विविध वैकल्पिक मार्गो में से सटीक मार्ग को चयन करने में समर्थ हो सकेंगे। • स्नातक स्तर पर शिक्षार्थी अनुसंधान हेतु समस्या के चयन का चुनाव करने में समर्थ होंगे क्योंकि जब वह विषय विशिष्ट का विस्तृत अध्ययन करेंगे तभी उनके समक्ष समस्याएँ आएंगी जिनका हल भविष्य में शोध के माध्यम से ढूँढने का प्रयास करेंगे।	• राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार भारतीय विद्या के अध्ययन के पश्चात शोध की अभिरुचि का जागरण होगा। • बहुविषयक ज्ञान से किस प्रकार भारतीय ज्योतिष संपन्न है, इसके ठीक–ठीक पर ज्ञान से अध्ययन करने वाला अनुसंधान की ओर चिंतन करने की शक्ति प्राप्त करेगा। ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक पहलू पर अनुसंधान की प्रवृत्ति का जागरण होगा। जिसके फलस्वरूप भारतीय ज्ञान परंपरा की मर्यादा का पालन हो सकेगा। • गणित, फलित और सिद्धांत तीनों का अध्ययन करने के पश्चात शोध करने की कुशलता को बढ़ावा मिलेगा	• इस कार्यक्रम के अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के भारतीय विद्या के प्रति मान्य सिद्धांतों के परिपालन में शोध की अभिरुचि पर केंद्रीय अध्ययन सामग्री का विकास किया गया है। • वेद और शास्त्र का आरण्यक और उपनिषद का तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक दार्शनिक और सांस्कृतिक ज्ञान विज्ञान का अध्ययन करने के पश्चात कोई भी अभ्यर्थी सर्व प्राचीन भारतीय ज्ञान से अपने शोध को प्रमाणित करने में दक्ष हो सकेगा। • वेद दुनिया के सबसे प्राचीन ग्रंथ है वैदिक ज्ञान के विस्तार से अध्ययन के पश्चात गणित, विज्ञान, खगोल, भूगोल, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा अध्यात्मिक ज्ञान विज्ञान हेतु नवीन प्रवृत्तियों के साथ अनुसंधान की ओर अग्रसर होने में कुशलता प्राप्त होगी
E	सीखने के सामान्य परिणाम **(Generic Learning Outcomes)**	• संप्रेषण के लिए मौखिक अथवा लिखित भाषा की महती आवश्यकता होती है। यदि हम भाषा के शुद्ध रूप को पढ़ना, बोलना, लिखना नहीं समझेंगे तो कैसे हम शुद्ध रूप में व्यवहार कर सकेंगे? इस दिशा में यह कार्यक्रम संस्कृत भाषा के शुद्ध रूप को हमारे सामने प्रस्तुत कर भावों के शुद्धसंप्रेषण में हमारी मदद करेगा। • सीखने के पश्चात व्यवहार में आए सुपरिणामों का प्रदर्शन स्नातक उपाधि प्राप्त छात्र कार्यालय स्थल पर ,उच्च स्तरीय अध्ययन स्थल पर और विद्वानों की	• खगोलीय घटनाओं के प्रति शोध के दृष्टिकोण में परिवर्तन आएगा। • ज्योतिष के द्वारा वर्ष भर की गतिविधियों का भारतीय विधि के अनुसार ज्ञान प्राप्त करके नवीन ज्ञान के अन्वेषण की प्रवृत्ति का विकास होगा। • ज्योतिष शास्त्र के तीनों स्कंधो के ज्ञान से गणित सिद्धांत और फलित तीनों का धर्मशास्त्र से	• इस कार्यक्रम के अधिगमकर्ता को वैदिक ज्ञान राशि के द्वारा भारतीय शास्त्रों, ब्रह्म विद्या, यज्ञ विद्या, भारतीय गणित, भारतीय विज्ञान, खगोल भूगोल वास्तु आदि का ज्ञान होगा। • प्राप्त ज्ञान से वह राष्ट्र के किसी भी नागरिक को वैदिक ज्ञान राशि का ठीक–ठीक परिचय दे सकेगा तथा वैदिक ज्ञान विज्ञान के अध्ययन की ओर सभी को प्रेरित भी कर सकेगा। • स्नातक उपाधि प्राप्त करने के पश्चात शोध की ओर उन्मुख होगा तथा वैदिक ज्ञान विज्ञान का ज्ञाता बनकर अध्यापन कार्य में संलग्न हो सकेगा।

		सभा में अपने व्यवहार द्वारा प्रदर्शित करेगा। • शिक्षार्थी में आलोचनात्मक शक्ति और समस्या के समाधान की शक्ति का विकास होगा।	किस प्रकार संबंध है तथा इसमें नई प्रवृत्तियों के आधार पर कैसे शोध होगा इस प्रवृत्ति का भी पूरा पूरा विकास संभव हो सकेगा	• इस कार्यक्रम के ज्ञान के आधार पर शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अपने ज्ञान का परामर्श के रूप में भी उपयोग कर सकेगा।
F	**संगठनात्मक मानवतावादी और नैतिक मूल्य** **(Constitutional, Humanistic, Ethical and Moral Values)**	• छात्रों में श्रीमद्भगवद्गीता, नीति कथाओं, शुकनासोपदेश भृगुवल्ली, शिवराजविजय इत्यादि साहित्य तथा वैदिक वाड.्मय, पौराणिक संस्कृति, आधुनिक संस्कृत साहित्य के माध्यम से मानवीयता और नैतिक मूल्यों का विकास होगा। • पर्यावरण चेतना,स्त्रीशिक्षा • विद्या की महिमा, मानवीयता • भाईचारा,समानता,राष्ट्रीयता,भारतीय संस्कृति से संबंधित अनेकों ग्रन्थों के माध्यम से छात्रों में इनके प्रति चेतना जागृत होगी।	• ज्योतिष किसी व्यक्ति और समुदाय का विषय नहीं है बल्कि यह शास्त्र के रूप में मार्गदर्शक और मानवमात्र की जीवन पद्धति का ठीक ठीक सहायक और विश्लेषक है। इसके ज्ञान से व्यक्ति भावनात्मक रूप से संगठित रहता है। • ज्योतिष शास्त्र वेद का अंग है इसलिए इसके तीनों क्षेत्रों गणित फलित और सिद्धांत के ज्ञान से व्यक्ति हार्दिक रूप से समाज के सुख–दुख से जुड़ सकता है। • मनुष्य के जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों के निवारण के लिए ज्योतिष का व्यावहारिक प्रयोग भी कर सकता है। इससे मानवीय मूल्यों का संवर्धन और संरक्षण होगा।	• वेद का ज्ञान किसी एक की पूंजी नहीं है। वेद से प्राप्त विशिष्ट ज्ञान से सामाजिक समरसता का विकास होगा। भेदबुद्धि का निर्णय पाते हुए कोई भी समाज के सभी संभागों से समरस व्यवहार में दक्ष होगा। राष्ट्रीयता और भाईचारे की भावना का विकास करने में बहुत सफल होगा। • जीवन की समस्त शिक्षा वैदिक ज्ञान राशि से ही किसी को प्राप्त हो सकती है। इसलिए सामाजिक सांस्कृतिक धार्मिक आध्यात्मिक सभी पक्षों के ज्ञान से मानवमात्र को लाभ पहुंचाने तथा मानवीय मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन की चेतना का जागरण होगा

G	**रोजगार** **और उद्यमशीलता कौशल** **(Employability and Entrepreneurship Skills)**	• इस कार्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् संस्कृत शिक्षक के रूप में नियुक्ति की दिशा में प्रयास किए जा सकते हैं। • भाषा के शुद्ध उच्चारण में अभ्यस्त होकर समाचार वाचक उद्घोषक के रूप में नियुक्ति का प्रयास कर सकते हैं।	• ज्योतिष से स्नातकोत्तर कार्यक्रम में अध्ययन कर लेने के पश्चात कोई भी ज्योतिष का ज्ञाता ज्योतिष के गणित ज्योतिष के सिद्धांत और ज्योतिष के वैज्ञानिक पक्षों को समाज में बताने के लिए दक्ष हो सकेगा। • वस्तुतः ज्योतिष वेदांग होकर शास्त्र है। शास्त्र ही सब की दृष्टि होते हैं। इसी परिभाषा को चरितार्थ करते हुए कोई भी ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता सर्वप्रथम शोध उपाधि धारण करते हुए शिक्षक बनने की ओर अग्रसर होगा। • रोजगार तथा स्वरोजगार की दृष्टि से ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान बहुत ही उपयोगी है। ज्योतिष जाने वाला व्यक्ति स्वयं भी रोजगार कर सकता है और दूसरे को भी रोजगार करा सकता है। • न केवल भारत में बल्कि विदेश में भी इसकी बहुत मांग है।	• संस्कृत शिक्षक के रूप में, उपनिषद शिक्षक के रूप में, शास्त्र शिक्षक के रूप में, समाज में कार्य करने की दक्षता का विकास होगा। • वैदिक विज्ञान के विभिन्न प्रतिष्ठानों में चल रहे कार्यों में अनुसंधान संबंधी परामर्श में अपने ज्ञान का उपयोग करेगा। • दार्शनिक और अध्यात्मिक ज्ञान संपन्न होकर सभी को श्रम करके जीवन यापन करने की प्रेरणा देगा। • भारतीय विज्ञान और अध्यात्म विद्या का शिक्षक बन सकेगा। • भारतीय अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, का समाज में अध्यापन कर सकेगा। • विस्तृत वैदिक ज्ञान विज्ञान के अध्ययन से शिक्षा के क्षेत्र में, सामाजिक व्यवहार के क्षेत्र में, चिकित्सा के क्षेत्र में, गणित के क्षेत्र में विशेष प्रकार की योग्यता हासिल करके रोजगार के विभिन्न मार्ग प्राप्त किए जा सकते हैं।